दिनांक 30 नवम्बर, 2011 को महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का सम्बोधन

हिन्दी साहित्य जगत के प्रख्यात विद्वान समालोचक एवं दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि, प्रोफेसर नामवर सिंह जी, विश्वविद्यालय के सम्मानीय कुलपति, प्रोफेसर सत्यपाल गौतम, प्रबन्ध मण्डल एवं विद्धत परिषद के सदस्यगण, आमंत्रित अतिथिगण, पत्रकार बन्धुओं, छात्र–छात्राओं, देवियों और सज्जनों,

इस विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में मुझे तीसरी बार भाग लेने का अवसर मिल रहा है। दीक्षान्त समारोह के प्रति मेरा विश्वविद्यालय का यह तीसरा दीक्षान्त समारोह है। दीक्षान्त समारोह

के नियमित आयोजन करने के लिए मैं आप सबको हार्दिक बधाई देते हुये विश्वविद्यालय की प्रगति के लिये अपनी शुभकामनायें देता हूँ।

विश्वविद्यालय के लिये यह गौरव की बात है कि डा0 नामवर सिंह जैसे मूर्धन्य विद्वान आज के अवसर पर हमारे साथ हैं। मैं उनका स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूँ। डा0 नामवर सिंह हिन्दी साहित्य में जाना पहचाना नाम है। आप एक अद्वितीय विद्वान तो हैं ही, साथ ही एक ऐसे व्यक्ति भी हैं, जिनका सानिध्य ज्ञान और साहित्य के प्रति लगाव विकसित करता है।

मैं व्यक्तिगत रूप से भी आप से एवं आपके विचारों से बहुत प्रभावित हूँ। मैंने आपका वह व्यक्तव सुना है जो आपने नेशनल बुक ट्रस्ट मेला, इन्दौर में दिया था। यह आपकी विनम्रता है कि अपना

परिचय एक पाठक के रूप में करवाना चाहते हैं। आप गांधी जी के अनन्य भक्त हैं। आपका कहना है कि आजकल लोगों की बैठकों में सजावट की सब चीजे मिल जायेंगी, मगर किताबें बहुत कम दिखाई देती हैं। यह सोचने का विषय है।

इस प्राचीन पांचाल क्षेत्र का, जिसे हम रूहेलखण्ड के नाम से जानते हैं, भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं इतिहास में अपनी विशिष्ट परम्पराओं और उपलब्धियों के कारण एक विशिष्ट स्थान है। सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय नेतृत्व प्रदान करने के उपरान्त देश के स्वतन्त्र होने तक इस क्षेत्र की अनेक विभूतियों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में अपना अमूल्य योगदान दिया। राष्ट्र के सम्मान एवं स्वतंत्रता प्राप्ति के पावन यज्ञ में इस क्षेत्र के अनेक क्रान्तिकारियों

ने अपने जीवन की आहूति देने में भी संकोच नहीं किया। इन सभी महानुभावों एवं स्वतंत्रता सेनानियों का पुण्य स्मरण करते हुए मैं उन्हें अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

यह प्रशंसनीय है कि पिछले 35 वर्षों में रूहेलखण्ड के सामाजिक तथा शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के प्रसार के लिए इस विश्वविद्यालय ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज इस विश्वविद्यालय के साथ सम्बद्ध महाविद्यालयों की संख्या 217 है। विश्वविद्यालय के परिसर तथा सम्बद्ध महाविद्यालयों के विस्तार के माध्यम से उच्च शिक्षा के प्रसार के लिए इस महत्वपूर्ण योगदान के लिए मैं विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों, कर्मचारियों तथा विश्वविद्यालय प्रशासन को बधाई देता हूँ।

वर्ष 1997 में इस विश्वविद्यालय का नामकरण समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले के नाम पर किया गया। इस नामकरण के साथ ही इस विश्वविद्यालय के लिए अपने नए नाम को सार्थक करते हुए मानवीय समता एवं बन्धुत्व भावना, सामाजिक न्याय एवं आर्थिक स्वालम्बन जैसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों के महत्व की पहचान के प्रसार का दायित्व भी प्राप्त हुआ। विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय, प्राचीन इतिहास तथा संस्कृति विभाग, उपचारात्मक प्रशिक्षण केन्द्र, नारी–विमर्श अध्ययन, सामाजिक कार्य अध्ययन एवं अन्य विभागों ने इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपने शोध कार्य एवं पाठ्यक्रमों के माध्यम से महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं।

1975 में इस विश्वविद्यालय की स्थापना एक सम्बद्धता–मूलक विश्वविद्यालय के रूप में हुई थी परन्तु यह हर्ष और गौरव का विषय है कि धीरे–धीरे इस विश्वविद्यालय ने अपने दृढ़ निश्चय, लगन तथा कर्मठता के परिणामस्वरूप अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। आज इस विश्वविद्यालय के परिसर में 21 विभाग अध्ययन तथा शोध में कार्यरत है।

मुझे बताया गया है कि विश्वविद्यालय के प्राणीशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, शिक्षा तथा प्राचीन इतिहास विभागों को उत्तर प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा गुणवत्ता की सम्भावना के विकास हेतु विशेष अनुदान भी दिए गए हैं। विश्वविद्यालय के प्रौद्योगिकी तथा अभियांत्रिकी संकाय को आगामी तीन वर्षों में आधारभूत संसाधनों तथा

प्रयोगशालाओं के विकास के लिए स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रमों तथा शोध–कार्य हेतु रु0 दस करोड़ की राशि के विशेष अनुदान की स्वीकृति प्राप्त हुई है।

विश्वविद्यालय परिसर तथा सम्बद्ध महाविद्यालयों में छात्रों में विभिन्न खेलों में रूचि तथा उत्साह उत्पन्न करने के परिणामस्वरूप वर्षों के अन्तराल के बाद पिछले दो वर्षों में विश्वविद्यालय ने अखिल भारतीय स्तर के खेलों में अनेक पदक प्राप्त किये हैं। यह हर्ष का विषय है कि विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय की एक एथलीट अखिल भारतीय स्तर पर स्वर्ण पद प्राप्त करने के उपरान्त बीजिंग में आयोजित विश्वस्तर की प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए चुनी गई

है। पिछले दो वर्षों में विश्वविद्यालय द्वारा खेलों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था हेतु विशेष कदम उठाए गए हैं।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) द्वारा विश्वविद्यालय प्रांगण में 8 खेलों में युवा खिलाड़ियों के प्रशिक्षण के लिये प्रशिक्षकों को उपलब्ध कराने की स्वीकृति दी गई है। आशा है कि भविष्य में इस दिशा में और अधिक प्रगति होगी। मुझे विश्वास है कि विश्वविद्यालय युवा छात्रों में सामंजस्य, सहनशीलता, आपसी सौहार्द, सद्भावना, शांति एवं करूणा जैसे शाश्वत मूल्यों की समझ विकसित करने में अपना योगदान देगा।

आज के दीक्षान्त समारोह में विभिन्न अकादमिक उपाधियां एवं पदक प्राप्त करने वाले मेधावी छात्र–छात्राओं एवं शोधार्थियों को मैं

अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे आशा है कि इस विश्वविद्यालय से प्राप्त शिक्षा, ज्ञान एवं विवेक का सदुपयोग आप अपने जीवन में करेंगे और अपने नागरिक दायित्वों को पूरी लगन एवं निष्ठा से निर्वाह करने का प्रयास करेंगे।

किसी भी देश की प्रगति की स्थिति, विकास तथा उपलब्धियाँ उस देश के नागरिकों के शैक्षिक स्तर एवं शिक्षा की गुणवत्ता तथा सामाजिक उपयोगिता से आंकी जाती है। दुनिया के अनेक देश शिक्षा एवं उच्च शिक्षा को अपनी सामाजिक नीतियों में शीर्ष प्राथमिकता प्रदान करने के परिणाम–स्वरूप आज ज्ञान–समाज बन कर तकनीकी तथा आर्थिक दृष्टि से विकसित देशों की पंक्ति में अग्रिम हैं। हमारी शैक्षिक संस्थाओं का लक्ष्य और प्रयास यही होना चाहिए कि कार्य

कुशल होने के साथ–साथ अध्ययन कर रहे विद्यार्थी श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों को आत्मसात करके अच्छे नागरिक बने।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानना था कि–''सही राष्ट्रीय जीवन की शुरूआत व्यक्ति से ही होती है। भ्रष्टाचार लालच और बिना कुछ किये जल्दी धनवान बनने की चाह से पनपता है। इसलिये समाज को ऐसे मूल्यों का समावेश करना होगा जो ईमानदारी और सच्चाई को सम्मान दें।''

आज डिग्रियां हासिल करने वाले विद्यार्थियों ने लम्बे समय तक अपने परिश्रम, लगन, प्रतिभा एवं विवेक का उपयोग करते हुए ज्ञानार्जन का प्रयास किया है। आज का यह दीक्षान्त समारोह सतत् चलने वाली मानवीय ज्ञान यात्रा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव तो है, लेकिन

यह उस शाश्वत् यात्रा का गन्तव्य नहीं है। आपके जीवन का गन्तव्य विश्वविद्यालय परिसर से बाहर का वृहत समाज है जिसमें आपको एक कर्मठ योगी की तरह अपनी शिक्षा से अर्जित कौशल का सार्थकतापूर्वक प्रयोग करना है। इस यात्रा में आप ज्ञान एवं कर्म क्षेत्र में और अधिक उत्साह के साथ अग्रसर हों, आपके विचार विवेकपूर्ण, कर्म शुभ एवं भावनाएं पवित्र हों, आपका भविष्य उज्जवल हो और लक्ष्य स्पष्ट हों, इस अवसर पर यही मेरी मंगल कामना है।

आप भविष्य में विश्वविद्यालय तथा देश की कीर्ति में चार चांद लगायें और निरन्तर आगे बढ़ते रहें, इसी कामना के साथ मैं आप सभी को एक बार फिर से अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ।

धन्यवाद–नमस्कार।